

## रॉबर्ट वानॉय, निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 5ए गोल्डन काफ़ और टैबरनेकल

समीक्षा

1. इज़राइल का महान धर्मत्याग - स्वर्ण बछड़ा - निर्गमन 32-34 बी। मूसा की पहली हिमायत

हम निर्गमन 32 में गोल्डन काफ़ घटना को देख रहे थे, जो आपकी रूपरेखा के अनुसार "इज़राइल का पहला महान धर्मत्याग" है। हम उस अध्याय पर काम कर रहे थे, और हम श्लोक 7 से 14 के मुद्दे पर पहुँचे, जो कि रूपरेखा पर है, "मूसा की पहली हिमायत।" हमने इस्राएल की ओर से मूसा की प्रार्थना को देखा, जिसमें उसने प्रार्थना की थी कि ईश्वर उस फैसले से दूर हो जाए जो उसने पद 10 में प्रस्तावित किया था, जहां ईश्वर कहता है, "मुझे अकेला छोड़ दो, ताकि मेरा क्रोध उन पर भड़क उठे, और मैं उन्हें नष्ट कर दूँ।" और तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।" तब मूसा ने मध्यस्थता की। हम उन अगले छंदों और उनके द्वारा दिए गए तीन तर्कों के माध्यम से आगे बढ़े। उन तीन तर्कों के संबंध में वह श्लोक 12 के अंत में कहते हैं, "अपने उग्र क्रोध से दूर हो जाओ और शांत हो जाओ। अपने लोगों पर विपत्ति मत लाओ।" फिर हम 14 में निष्कर्ष पढ़ते हैं, "तब प्रभु पछताया, और अपनी प्रजा पर वह विपत्ति नहीं लाया जो वह चाहता था।" पिछले सप्ताह हमने यहीं समाप्त किया था।

इस बारे में बात करते हुए कि हम उस शब्द "आराम करो" को कैसे समझते हैं, यह *नाहम* है, हिब्रू में मुख्य मौखिक रूप का अनुवाद अक्सर "पश्चाताप" किया जाता है। मैं विशेष रूप से उस चर्चा पर वापस नहीं जाना चाहता, लेकिन मैं वहीं से बात शुरू करना चाहता हूँ। इस पाठ से हम जो देख सकते हैं वह यह है कि मूसा की प्रार्थना ईश्वर से आग्रह करती है कि उसने जो कहा वह उसे संशोधित करे जो वह करना चाहता था। श्लोक 10 में, भगवान "मायूस" करते हैं। आप कह सकते हैं कि उसका मन बदल गया। यह कुछ ऐसा है जिसे हम पवित्रशास्त्र में लगातार ईश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं के प्रभावी होने के संबंध में, ईश्वर के लोगों के पश्चाताप के जवाब में देखते हैं।

याद रखें, हमने यिर्मयाह 18:7-8 को देखा था। यह एक मुख्य पाठ है जहां भगवान कहते हैं, "अगर मैं कहता हूं कि मैं न्याय लाऊंगा, और लोग पश्चाताप करेंगे, तो मैं नरम हो जाऊंगा," और इसके विपरीत, "अगर मैं लोगों को धन्य कहता हूं, और लोग मुझसे दूर हो जाते हैं, तो मैं आशीर्वाद के बजाय निर्णय लाऊंगा।" अब यह स्वीकार किया गया है कि हम वास्तव में कठिन धार्मिक चर्चा में हैं कि वहां जो कुछ भी चल रहा है उसे कैसे समझा जाए। इस पाठ में यहां एक मध्यस्थ के रूप में मूसा की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है, न कि दैवीय सर्वज्ञता और संप्रभुता के धार्मिक मुद्दों पर। तो यह एक और चर्चा है।

## 2. योएल 2:12 -- नाहम

मैं चाहता हूं, आगे बढ़ने से पहले, आपको एक अन्य पाठ की ओर इंगित करूं, जोएल 2:12 से 13, वहां आपके पास एक समान पाठ है। योएल 2:12 में यह कहा गया है, "प्रभु की यह वाणी है, "अब भी," उपवास, रोना और विलाप करते हुए अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास लौट आओ। अपना दिल फाड़ो, अपने कपड़े नहीं। अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, क्योंकि वह दयालु और कृपालु है, क्रोध करने में धीमा और अति प्रेममय है, और विपत्ति डालने से नहीं कतराता।" यह फिर से वही शब्द है. "वह [ *नहम* ] विपत्ति भेजने से कतराता है।" इसलिए जब लोग भगवान की ओर मुड़ते हैं और पश्चाताप करते हैं, तो भगवान और उनके लोगों के बीच का रिश्ता ऐसा होता है कि वह दयालु, सहनशील और माफ कर देने वाला है। वह पश्चाताप का कारक है। यह मध्यस्थता प्रार्थना का भी एक कारक है।

याकूब 5:16 को देखें। यह प्रार्थना के बारे में बात करने वाला एक अंश है जहां जेम्स कहते हैं, "इसलिए एक-दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो, और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम ठीक हो जाओ। धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावी होती है।" मेरे अपने शब्दों में, ईश्वर ने इसे इतनी संप्रभुता से व्यवस्थित किया है कि वह परिणाम लाने के लिए लोगों की प्रार्थना का उपयोग करना चुनता है, मुझे लगता है कि उन प्रार्थनाओं के बिना आप कह सकते हैं कि ऐसा नहीं होता। फिर आपने पढ़ा, "एलिय्याह हमारे जैसा ही एक आदमी था। उसने सच्चे दिल से

प्रार्थना की कि बारिश न हो और साढ़े तीन साल तक ज़मीन पर बारिश नहीं हुई। उसने फिर प्रार्थना की और आकाश से वर्षा हुई।” इसलिए मुझे लगता है कि यहां जोर इस बात पर है कि ईश्वर कोई स्थिर प्रेरक नहीं है। हाँ, परमेश्वर अपने उद्देश्यों में अपरिवर्तनीय है। लेकिन वह भी एक व्यक्ति है, और वह पश्चाताप का जवाब देता है और अपने लोगों के प्रति दयालु है और इस उदाहरण में मूसा की प्रार्थना के प्रति दयालु है।

सी। मूसा का शिविर में लौटना - निर्गमन 32:15-24

### 1. पत्थर की पट्टियों का विनाश

आइए सी पर आगे बढ़ें, "मूसा शिविर में लौट आया - निर्गमन 32:15-24।" वहां दो उप-शीर्ष हैं, 1) "पत्थर की मेज़ों का विनाश" और 2) "हारून के लचर बहाने।" यह दिलचस्प है कि पहाड़ पर मूसा मध्यस्थ है। जब वह पहाड़ से उतर कर छावनी में आता है, तो वह लोगों के पाप के कारण उन पर अपना क्रोध प्रकट करता है। आप पद 15 में देखते हैं, "मूसा मुड़ा और गवाही की दोनों तख्तियाँ अपने हाथों में लेकर पहाड़ से नीचे चला गया। वे दोनों तरफ, आगे और पीछे खुदे हुए थे, तख्तियाँ ईश्वर का काम थीं, लिखावट ईश्वर का लेखन था, तख्तियों पर खुदा हुआ था, जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा था, उन पट्टियों पर जो था वह दस आज्ञाएँ थीं। लेकिन वह शिविर में आता है, और आप निर्गमन 32:19 में पढ़ते हैं, "जब मूसा ने शिविर के पास आकर बछड़े और नाच को देखा, तो उसका क्रोध भड़क उठा और उसने तख्तियों को अपने हाथों से फेंक दिया, और उन्हें पैरों के पास टुकड़े-टुकड़े कर दिया।" पहाड़ का।" तो मूसा नीचे आता है, वह देखता है कि क्या हो रहा है और वह तख्तियाँ तोड़ देता है।

यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 34 को देखें तो वहां ज़ोंडरवन द्वारा प्रकाशित बाइबिल स्टूडेंट्स कमेंट्री में गिस्पेन द्वारा लिखित पैराग्राफ है।

गिस्पेन कहते हैं, "छंद 15 और 16 कोष्ठक हैं और दो पट्टियों के महान मूल्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं: वे पूरी तरह से लेखन से ढके हुए थे, जो स्वयं भगवान द्वारा अंकित थे... यह मूल कथन इंगित करता है कि मूसा द्वारा बाद में पट्टियाओं को तोड़ना गलत था: यहां तक कि वह, मध्यस्थ मध्यस्थ, पाप में गिर गया। यदि मूसा ने सोने के बछड़े के साथ-साथ दो गोलियाँ लोगों को भेंट की होती तो यह बहुत अधिक प्रभावशाली होता और परमेश्वर पर अधिक ध्यान केंद्रित करता; वह तुलनात्मक धर्म का एक पाठ होता! मूसा ने "परमेश्वर के कार्य" का उल्लंघन किया था, जहाँ उसे केवल पापी लोगों के कार्य को नष्ट करने का अधिकार था!

मुझे पूरा यकीन नहीं है कि गिस्पेन वहीं है। यह एक दिलचस्प सुझाव है लेकिन पाठ में मूसा ने जो किया उसके सही या गलत होने पर कोई टिप्पणी नहीं की गई है। मुझे ऐसा लगता है कि मूसा का कार्य एक प्रतीकात्मक कार्य था। इज़राइल ने अभी-अभी वाचा तोड़ी थी। उन्होंने मूलभूत दायित्वों में से एक का उल्लंघन किया था, "आप कोई भी उत्कीर्ण छवि नहीं बनाएंगे।" उन्होंने ऐसा किया था. ऐसा लगता है जैसे वे ईश्वर की पूजा को अपने आस-पास के बुतपरस्त लोगों की पूजा के प्रकारों के साथ जोड़ने के किसी प्रकार के समन्वयवादी विचार की ओर बढ़ रहे थे। यह अनुबंध का उल्लंघन है. गोलियों का टूटना वाचा के टूटने का प्रतीक है, कम से कम मैं इसे इसी तरह पढ़ूंगा। इसके लिए मूसा को डांटा नहीं गया है। प्रभु उससे बस इतना कहते हैं, "दो और गोलियाँ यहाँ ले आओ" और वह फिर से ऐसा करता है।

## 2. हारून का लंगड़ा बहाना - निर्गमन 32:21

परन्तु किसी भी स्थिति में, पर्वत पर मूसा मध्यस्थ है; छावनी में वह लोगों ने जो किया उस पर अपना क्रोध प्रकट करता है। फिर वह हारून को संबोधित करता है, और अध्याय 32 श्लोक 21 में ध्यान देता है, वह हारून से कहता है, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया, कि तुम उन्हें इतने बड़े पाप में ले गए?" तब आपको एक बहुत ही लचर प्रतिक्रिया मिलती है, जहां हारून खुद को माफ़ करने की कोशिश करता है, और वह कहता है, "आप जानते हैं कि ये लोग बुराई के प्रति कितने प्रवृत्त हैं। उन्होंने मुझ से कहा, 'हमारे लिये एक देवता बना जो हमारे आगे आगे चले। जहाँ तक उस

मूसा का प्रश्न है जो हमें मिस्र से निकाल लाया, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ है।' तो मैंने उनसे कहा, 'जिसके पास कोई सोने का आभूषण हो, वह उतार दे।' तब उन्होंने मुझे सोना दिया, और मैं ने उसे आग में डाल दिया, और यह बछड़ा निकला!" जब आप उसे पढ़ेंगे तो आप मुस्कराए बिना नहीं रह पाएंगे, क्योंकि यह स्पष्ट है कि वह जिम्मेदारी से बचने का प्रयास कर रहा है। ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। यदि आप तुलना करें, तो हारून वहां क्या कहता है। पद 4 पर वापस जाएँ, "उन्होंने उसे जो कुछ दिया था, वह ले लिया, और एक बछड़े के आकार की मूर्ति बनाई, और उसे एक औज़ार से बनाया!" इसलिए हारून इसमें कहीं अधिक शामिल था जितना उसने उस समय मूसा को बताया था।

यदि आप व्यवस्थाविवरण 9 पर जाएँ, जबकि मूसा बाद में इस पर विचार करता है, तो वह कुछ ऐसी बात करता है जिसका उल्लेख निर्गमन 32 में नहीं है। व्यवस्थाविवरण 9:20 में, वह कहता है, "यहोवा हारून से इतना क्रोधित था कि उसने उसे नष्ट कर दिया। लेकिन उस समय मैंने हारून के लिए भी प्रार्थना की। और मैं ने तेरे उस पाप की वस्तु अर्थात् बछड़े को भी जो तू ने बनाया था ले लिया, और आग में जला दिया। तब मूसा ने भी हारून की ओर से मध्यस्थता की, और यहोवा ने अपना क्रोध हारून पर से भी दूर कर दिया।

मूसा स्वयं हारून के घटिया बहानों का जवाब नहीं देता, शायद शिविर में जो कुछ चल रहा था उससे विचलित था, क्योंकि अगले ही श्लोक, अध्याय 32 श्लोक 25 में, मूसा को बताया गया था कि लोग जंगली भाग रहे थे और हारून ने उन्हें बाहर निकलने दिया था नियंत्रण का, इसलिए वह छावनी के प्रवेश द्वार पर खड़ा हुआ और कहा, 'जो कोई भी प्रभु के लिए है वह मेरे पास आए,' और सभी लेवीय उसके पास इकट्ठे हो गए।

### 3. लोगों पर प्रतिशोध - निर्गमन 32:25-29

यह हमें आपकी रूपरेखा पर लाता है, "लोगों से प्रतिशोध - निर्गमन 32:25-29।" जब मूसा यह चुनौती देता है, "जो कोई भी यहोवा के लिए है," और लेवी जवाब देते हैं, तो वह उन्हें बताता है कि वह उनसे क्या चाहता है। वह कहता है, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि हर एक

पुरूष अपनी बगल में तलवार बान्धे। शिविर में एक छोर से दूसरे छोर तक आगे-पीछे जाओ, प्रत्येक अपने मित्र और पड़ोसी को मार डालो।' लेवियों ने मूसा की आज्ञा के अनुसार किया, और उस दिन कोई तीन हजार पुरूष मर गए। तब मूसा ने कहा, आज तुम [लेवियों को] यहोवा के लिये अलग कर दिए गए हो, क्योंकि तुम अपने ही बेटों और भाइयों के विरुद्ध थे, और उस ने आज के दिन तुम को आशीष दी है।

इसलिए मूसा ने यहोवा के पक्ष के लोगों को अपने पास आने के लिए बुलाया, और लेवियों ने उत्तर दिया। वह उनसे कहता है कि वे छावनी में चले जाएं और उन लोगों को मार डालें जो इस मूर्तिपूजा में भाग ले रहे थे; रिश्तों की परवाह किए बिना। यदि वह व्यक्ति कोई भाई, पिता, या कोई रिश्तेदार, या मित्र, कुछ भी हो, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तीन हजार लोगों को मौत की सजा दी गई। अब इस प्रकार की हिंसक कार्रवाई को समझना और स्वीकार करना कभी-कभी हमारे लिए कठिन होता है। कई लोगों के लिए यह पुराने नियम के ईश्वर के विरुद्ध एक आपत्ति है। लेकिन यहां यह स्पष्ट है कि यह कुछ ऐसा है जिसकी मांग भगवान ने की है। इस संदर्भ में यह वह उद्देश्य है जिस पर जोर दिया गया है: लोगों के लिए भगवान की आज्ञाओं की गंभीरता, विशेष रूप से उस मूल नियम में। उस नियम का पालन करना था। यह परमेश्वर के अनुबंधित लोगों के रूप में इस्राएल के जीवन की शुरुआत है। यदि वे इस तरह से शुरुआत करते हैं जो इस प्रकार का आचरण प्रदर्शित करता है, तो ज्यादा समय नहीं लगेगा जब वे वापस सुखवाद, बुतपरस्ती में चले जाएंगे, उन लोगों की तरह जिनके बीच उन्हें बसना था। इसलिए मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह एक ऐसा मुद्दा है जो ईश्वर के अनुबंधित लोगों के रूप में इजराइल के अस्तित्व से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। उन्हें उसके लिए एक पवित्र राष्ट्र बनना था - अन्य सभी लोगों से अलग; पुजारियों का एक राज्य - उसके अपने प्रिय लोग।

4. लेवीय: कूस (उत्प. 49:7) आशीर्वाद देने की ओर मुड़ा, श्लोक 29 में वास्तव में "आशीर्वाद" क्या है, इसका वर्णन यहां नहीं किया गया है। मैं कह सकता हूं कि श्लोक 29 में भी अनुवाद की समस्या है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यहां जो हो रहा है वह यह है कि लेवियों ने मूसा के इस निमंत्रण का जवाब देकर और उसके साथ खड़े होने के लिए अपने पिता याकूब के अभिशाप को

बदल दिया है। भगवान। उन्होंने उस अभिशाप को आशीर्वाद में बदल दिया। यदि आप उत्पत्ति 49:7 पर वापस जाते हैं, तो आपको उत्पत्ति 49 में वह आशीर्वाद मिलता है जो याकूब अपने प्रत्येक पुत्र को देता है। और पद 5 में, आपके पास शिमोन और लेवी का संदर्भ है। श्लोक 5 कहता है, "शिमोन और लेवी भाई हैं - उनकी तलवारें हिंसा के हथियार हैं। मुझे उनकी सभा में न आने दो, मुझे उनकी सभा में न आने दो, क्योंकि उन्होंने अपने क्रोध में मनुष्यों को घात किया है, और अपनी इच्छानुसार बैलों की टांग काट दी है। उनका क्रोध शापित हो; इतना भयंकर, उनका क्रोध इतना क्रूर! मैं उन्हें याकूब में तितर-बितर कर दूंगा, और इस्राएल में तितर-बितर कर दूंगा।" खैर यह शिमोन और लेवी दोनों के लिए सच होगा। न तो किसी के पास जनजातीय क्षेत्र होगा और न ही उनमें से किसी के पास। शिमोन एक तरह से यहूदा में समा गया था। लेवी को कभी भी जनजातीय क्षेत्र का आवंटन नहीं मिला; इसके बदले उन्हें लेवीय नगर मिले। और यही वह श्राप था जो लेवियों पर डाला गया था।

यदि आप गिनती 3:6-13 पर जाएँ, तो वहाँ आप पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'लेवी के गोत्र को ले आ, और उन्हें हारून याजक के पास उसकी सहायता के लिये प्रस्तुत कर। वे मिलापवाले तम्बू में उसके और सारी मण्डली के लिये मिलापवाले तम्बू का काम करके कर्तव्य निभाएं। उन्हें मिलापवाले तम्बू की सारी साज-सज्जा की देखभाल करनी है, और मिलापवाले तम्बू का काम करके इस्राएलियों के दायित्वों को पूरा करना है। लेवियों को हारून और उसके पुत्रों को दे दो; वे इस्राएली हैं जो पूर्ण रूप से उसे सौंपे जानेवाले हैं। हारून और उसके पुत्रों को याजक का काम करने के लिये नियुक्त करो, और जो कोई पवित्रस्थान के पास आए वह मार डाला जाए।' यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, मैं ने इस्राएलियोंमें से हर एक इस्राएली स्त्री के पहिलौठे पुत्र के बदले लेवियोंको ले लिया है। लेवी मेरे ही हैं, सब पहिलौठे मेरे ही हैं। जब मैं ने मिस्र के सब पहिलौठोंको मार डाला, तब क्या मनुष्य, क्या पशु, इस्राएल के सब पहिलौठोंको मैं ने अपने लिये अलग कर लिया। वे मेरे होंगे।" लेवियों को पहिलौठे का प्रतिनिधित्व करना था और उन्हें मिलापवाले तम्बू में और अंततः मंदिर में काम से जुड़े सभी कर्तव्यों को निभाने का काम दिया गया था। इस प्रकार लेवीय पहिलौठों के स्थान पर पवित्रस्थान की सेवा के लिये नियुक्त किए गए। मुझे ऐसा लगता है कि यह वह घटना है जिसने लेवी को श्रापित होने से धन्य होने में परिवर्तन का आधार प्रदान किया

क्योंकि वे सुनहरे बछड़े की घटना के दौरान मूसा के साथ खड़े थे।

इ। आगे की हिमायत - निर्गमन 32:30-33:23 1. मिटा दिया जाना

आपकी रूपरेखा पर उप-बिंदु ई है, "आगे की मध्यस्थता - निर्गमन 32:30-33:23।" हम श्लोक 30 में पढ़ते हैं, "अगले दिन मूसा ने लोगों से कहा, 'तुम लोगों ने बहुत बड़ा पाप किया है। लेकिन अब मैं प्रभु के पास जाऊंगा, शायद मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूँ।" लोग शायद उन लोगों के लिए शोक मना रहे थे जिन्हें मौत की सजा दी गई है, निस्संदेह वे उनके पाप की गंभीरता से प्रभावित थे। अब मूसा फिर से कहता है, वह प्रभु के पास उनका मध्यस्थ - उनका प्रतिनिधि बनकर जाएगा। और ध्यान दें कि वह इसे कैसे कहते हैं, "शायद मैं आपके पाप का प्रायश्चित्त कर सकता हूँ।"

तो वह वापस जाता है और हम अध्याय 32 श्लोक 31 में पढ़ते हैं, "इन लोगों ने कितना बड़ा पाप किया है! उन्होंने अपने आप को सोने का देवता बना लिया।" लेकिन फिर वह श्लोक 32 में यह उल्लेखनीय प्रस्ताव रखता है, "लेकिन अब, कृपया, उनके पाप को क्षमा करें।" मुझे लगता है कि इसका बेहतर अनुवाद किया जा सकता है: "लेकिन अब, यदि आप उनके पाप माफ कर देंगे," और फिर एक रिक्त स्थान जहां आपको "अच्छा" भरना चाहिए। "लेकिन यदि नहीं, तो आपने जो किताब लिखी है, उसमें से मुझे मिटा दीजिये।" मूसा का वह कथन काफी हद तक रोमियों 9:3 में पॉल के कथन के समान है। पौलुस कहता है, "मैं चाहता कि मैं स्वयं अपने भाइयों, मेरी जाति के लोगों, अर्थात् इस्राएल के लोगों के कारण मसीह से अलग हो जाता।" यह वही आत्मा है जो मूसा के पास थी। सवाल यह है कि वह क्या प्रस्ताव दे रहे हैं? यह "आपकी लिखी पुस्तक" क्या है? इस पर टिप्पणीकारों के बीच राय बंटी हुई है। "कृपया उनके पाप को क्षमा करें, लेकिन यदि नहीं, तो आपने जो पुस्तक लिखी है, उसमें से मेरा नाम काट दें।" क्या वह पुस्तक जीवन की पुस्तक है? दूसरे शब्दों में, क्या मूसा कह रहा है, "मुझे मरने दो"? मुझे लगता है यह संभव है। लेकिन दूसरी व्याख्या जिसके लिए कुछ लोग तर्क देते हैं, वह है रिडीम्ड की पुस्तक। मुझे लगता है कि शायद इसकी संभावना अधिक है। क्योंकि तब यह और अधिक धार्मिक प्रश्न पैदा करता है: आपको मुक्ति की पुस्तक से कैसे मिटाया जा सकता है? शाश्वत सुरक्षा के विचार के बारे में क्या? लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि



मूसा जो प्रस्ताव कर रहा है वह यह है कि वह इन लोगों का दंड उन लोगों में से मिटा देगा जिन्हें छुटकारा दिलाया गया था, ताकि वे उन पर भगवान के आगे के फैसले से मुक्त हो सकें।

यदि आप अपने उद्धरणों को देखें, तो यहां कई चीजें हैं, पृष्ठ 37 के शीर्ष पर देखें। यह फिर से गिस्पेन से है। वह कहते हैं, "आयत 33 में, प्रभु कहते हैं कि आयत 32 में मूसा द्वारा दिए गए प्रस्ताव को स्वीकार करना उनके लिए असंभव था।" आयत 32 में मूसा कहता है, "परन्तु अब यदि तू उनका पाप क्षमा करेगा, तो अच्छा है, परन्तु यदि नहीं, तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मुझे मिटा दे। यहोवा ने मूसा को उत्तर दिया, जिस किसी ने मेरे विरुद्ध पाप किया है, मैं उसे अपनी पुस्तक में से मिटा दूंगा। अब जाओ लोगों का नेतृत्व करो।" जैसा कि गिस्पेन कहते हैं, "उनकी किताब से मिटाया जाना किसी की इच्छा पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि पूरी तरह से उस पर निर्भर करता है। और वह केवल उन लोगों को दंडित करता है जिन्होंने व्यक्तियों का सम्मान किए बिना, उसके खिलाफ पाप किया है। प्रभु ने यह नहीं कहा कि वह सदैव ऐसा ही करता है; उसने केवल मूसा को किताब से हटाने के लिए प्रभु को प्रेरित करने के प्रयास में उसे काट दिया। मूसा ने भी यहोवा के विरुद्ध पाप किया, और यहोवा ने उसे नष्ट न किया। हमें इस पद को संपूर्ण बाइबिल के संदर्भ में देखना चाहिए, जो बाद में इस पुस्तक के बारे में और प्रभु के वैकल्पिक आदेश के बारे में और अधिक खुलासा करता है। फिर भी मूसा की पेशकश का असर हुआ, जैसा कि श्लोक 34 से पता चलता है। उससे कहा गया कि वह जाकर लोगों को कनान ले जाये।"

यदि आप अपने उद्धरणों के पृष्ठ 36 पर जाएं, तो वहां जॉन कैल्विन के कई पैराग्राफ हैं। मैं यह सब पढ़ने के लिए समय नहीं लेना चाहता, लेकिन दूसरे पैराग्राफ पर जाना चाहता हूं, जहां वह श्लोक 33 पर टिप्पणी कर रहा है, "जिसने मेरे खिलाफ पाप किया है, मैं उसे मिटा दूंगा।" इस पर कैल्विन की टिप्पणी इस प्रकार है, "इन शब्दों में ईश्वर स्वयं को मानव मन की समझ के अनुसार ढाल लेता है, जब वह कहता है, 'मैं उसे मिटा दूंगा;' क्योंकि कपटी लोग उसके नाम का ऐसा झूठा प्रचार करते हैं, कि वे परदेशी नहीं ठहरते, जब तक कि परमेश्वर उन्हें खोलकर न छोड़ दे; और इस कारण उनका प्रगट तिरस्कार मिटना कहलाता है।

अब, यदि आप पिछले पैराग्राफ की पहली दो पंक्तियों पर वापस जाते हैं, तो कैल्विन कहते हैं, "'पुस्तक' से, जिसमें भगवान कहते हैं कि उन्होंने अपने चुने हुए को लिखा है, रूपक रूप से,

उनके आदेश को समझा जाना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, वह इसे ईश्वर के आदेश के रूपक के रूप में देखता है। मुझे आगे पढ़ने दीजिए, "लेकिन मूसा ने जो अभिव्यक्ति इस्तेमाल की है, जिसमें पवित्र लोगों की संख्या से बाहर करने की बात कही गई है, वह गलत है, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि जो एक बार चुना गया है उसे कभी भी पदावनत नहीं किया जाना चाहिए; और वे पागल," - इस प्रकार की भाषा आप अक्सर केल्विन में पाते हैं और केल्विन की तुलना में लूथर में अधिक पाते हैं - "जो, इस आधार पर, जहाँ तक संभव हो, ईश्वर की शाश्वत पूर्वनियति के संबंध में हमारे विश्वास के मुख्य लेख को उलट देते हैं, जिससे उनका द्वेष उनकी अज्ञानता से कम नहीं प्रदर्शित होता है। डेविड एक ही अर्थ में दो अभिव्यक्तियों का उपयोग करता है, 'ब्लॉटिड आउट' और 'लिखित नहीं।' भजन 69:28, 'उन्हें जीवन की पुस्तक में से मिटा दिया जाए और धर्मियों के साथ न लिखा जाए।' इसलिए हम ईश्वर की सलाह में किसी भी बदलाव का अनुमान नहीं लगा सकते हैं, लेकिन यह वाक्यांश केवल यह प्रकट करता है कि अपमानित लोग, जो एक सीज़न के लिए चुने हुए लोगों की संख्या में गिने जाते हैं, किसी भी तरह से चर्च के निकाय से संबंधित नहीं होते हैं। इस प्रकार गुप्त सूची, जिसमें निर्वाचित लोगों के बारे में लिखा जाता है, की तुलना ईजेकील ने उस बाहरी पेशे से की है, जो अक्सर धोखा देने वाला होता है। इसलिए, उचित रूप से, मसीह ने अपने शिष्यों को आनन्दित होने के लिए कहा, 'क्योंकि उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए थे।'"

अपने उद्धरण में, यदि आप पृष्ठ 34 पर वापस जाते हैं, तो पृष्ठ के नीचे, आपको बर्कोवर, *डिवाइन इलेक्शन दिखाई देगा*। जीवन की इस पुस्तक पर कुछ टिप्पणियाँ हैं जैसा कि इसे नए नियम में समझा जाता है। मैं पूरा बर्कोवर नहीं पढ़ने जा रहा हूँ, लेकिन पृष्ठ 36 के शीर्ष पर, इसका अंतिम पैराग्राफ, जहां बर्कोवर कहता है, "जीवन की पुस्तक गहरे आनंद (ल्यूक 10:20) के साथ, सुसमाचार की सेवा के साथ जुड़ी हुई है (फिलिपियों) 4:3), और बड़े आतंक के बीच सांत्वना के साथ। 'नए नियम में जीवन की पुस्तक भाग्यवाद से मुक्त हो जाती है, यह भगवान के बच्चों के लिए मोक्ष की निश्चितता की अभिव्यक्ति बन जाती है जो खुद को अनंत काल के लिए चुने हुए जानते हैं क्योंकि उनकी शाश्वत नींव भगवान की कृपा की सलाह में है।' मुझे ऐसा लगता है, उन सभी परिच्छेदों में जहां हमें इस पुस्तक का संदर्भ मिलता है, वास्तव में यह पता चलता है कि यह कुछ ऐसा है जो आस्तिक को खुशी और निश्चितता और आश्वासन देता है।

इसलिए जब हम इस पाठ पर वापस आते हैं, तो मूसा यह प्रस्ताव रखता है, प्रभु वास्तव में यह नहीं कहते हैं कि यह संभव है या यह संभव नहीं है; वह कहता है, यह मुझ पर निर्भर है, "मैं करूंगा," श्लोक 33 में, "जिसने भी मेरे विरुद्ध पाप किया है, उसे अपनी पुस्तक से मिटा दूंगा।" परन्तु फिर उसने मूसा से कहा, "तू जा और लोगों को उस स्थान पर ले जा जिसकी चर्चा मैं ने की थी।" इसलिये उसने मूसा को लोगों की अगुवाई करने का काम सौंपा; वह सीधे तौर पर उनके प्रस्ताव का उत्तर नहीं देते हैं, लेकिन कहते हैं कि पुस्तक से ब्लॉटिंग करना अकेले उनके ऊपर निर्भर करता है।

2. मूसा का नेतृत्व करना और भूमि के निवासियों को बाहर निकालना      जैसे ही वह अध्याय 32 श्लोक 34 में मूसा से कहता है, जाओ और लोगों का नेतृत्व करो, यहां एक और विचार पेश किया गया है जो बेहद महत्वपूर्ण है। वह कहता है, "जाओ इन लोगों को उन स्थानों पर ले चलो जिनके विषय में मैं ने कहा है, और मेरा दूत तुम्हारे आगे आगे चलेगा। हालाँकि, जब मेरे लिए दण्ड देने का समय आएगा, तो मैं उन्हें उनके पापों के लिए दण्ड दूँगा।" वह कहता है, "मेरा स्वर्गदूत तेरे आगे आगे चलेगा," और जब आप 33:2 में अगले अध्याय में आते हैं, तो इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। वह कहता है, "मैं तेरे आगे आगे एक दूत भेजूंगा, और कनानी, एमोरी, हिती, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों को निकाल दूंगा। दूध और मधु के देश पर जाओ।" लेकिन उस देवदूत का महत्व यह है: मैं तुमसे पहले एक देवदूत भेजने जा रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा! निर्गमन 33:3, "क्योंकि तुम हठीले मनुष्य हो, इसलिये मैं तुम्हें मार्ग ही में नाश कर डालूँगा।" अध्याय 32 पद 35 में तुम पढ़ते हो, कि उन पर मरी पड़ी, यही उनका दण्ड था, परन्तु वह कहता है, कि अब कनान देश पर चढ़ जाओ, और मैं अपना दूत भेजूंगा, परन्तु मैं आप तुम्हारे साथ न जाऊँगा। " अध्याय 33 के शेष भाग में यही मुद्दा बन जाता है।

3. निर्गमन 33:7 - परमेश्वर इस्राएल का नेतृत्व करता है, देवदूत नहीं और तम्बू और

## बैठक

यहाँ एक मूल बात है, मैं उस पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, इससे पहले कि हम प्रभु के कथन के विकास का पता लगाएँ, "एक देवदूत तुम्हारे साथ जाएगा, मैं स्वयं नहीं जाऊँगा;" जिसके कारण मूसा को और अधिक हस्तक्षेप करना पड़ा, और फिर से प्रभु नरम हो गए, और कहा कि उनकी स्वयं की उपस्थिति उनके साथ रहेगी। लेकिन वहाँ पहुंचने से पहले, निर्गमन 33:7 को देखें। इसने काफ़ी चर्चा छेड़ दी है। हम पढ़ते हैं, "मूसा एक तम्बू बनाता था, [या तम्बू लेता था], और उसे छावनी के बाहर कुछ दूरी पर खड़ा करता था, और उसे 'मिलाप का तम्बू' कहता था। जो कोई यहोवा से प्रश्न करेगा वह छावनी के बाहर मिलापवाले तम्बू के पास जाएगा।" मैं निर्गमन 33:7 में मिलन तंबू के उस संदर्भ पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ।

आलोचनात्मक विद्वानों ने इस श्लोक का बहुत उपयोग किया है, और वे बैठक के आदिम तम्बू के रूप में जो सोचते थे, उसके बीच एक विसंगति देखते हैं, जो उनके अनुसार ई स्रोत का हिस्सा है और ई स्रोत तम्बू है। एक बहुत ही मानक आलोचनात्मक सिद्धांत के अनुसार, मूसा के समय में, जंगल की अवधि में कोई तम्बू नहीं था। यदि आप एक समयरेखा खींचते हैं, तो निश्चित रूप से, ई स्रोत लगभग 850 या 950 ईसा पूर्व था। पी स्रोत लगभग 450 ईसा पूर्व था। मूसा 1200 से 1400 ईसा पूर्व में वापस आता है। आलोचकों का कहना है कि मूसा के समय में कोई तम्बू नहीं था। वह सारी सामग्री जो विस्तार से वर्णन करती है कि तम्बू का निर्माण कैसे किया जाना था, और इसे वास्तव में कैसे स्थापित किया गया था, वे कहते हैं कि यह सब देर से, निर्वासन के बाद की पी दस्तावेज़ सामग्री है। यह दर्शाता है कि पुजारी लेखक मंदिर और इसकी संरचना और पवित्र स्थान के तत्वों, वेदी, शोब्रेड की मेज और उन सभी चीजों को लेकर क्या कर रहे थे, और इसे मोज़ेक समय में वापस पेश कर रहे थे। तो तम्बू का वर्णन निर्वासन काल के बाद के समय से उस पहले की अवधि में एक प्रक्षेपण मात्र है, लेकिन वास्तविकता यह है कि तम्बू स्वयं कभी अस्तित्व में नहीं था। और अध्याय 33 के इस श्लोक 7 में आपके पास तम्बू का ई विवरण है और विस्तृत विवरण एक पी दस्तावेज़ विवरण है। तो आपके पास ये दो स्रोत हैं, और इसलिए तम्बू के दो अलग-अलग विवरण हैं। तंबू अपने आप में वास्तव में अनैतिहासिक था - इसका अस्तित्व कभी नहीं था।

4. तम्बू पर अब, तम्बू का निर्माण क्यों किया गया था? इस समय, इसे अभी तक एक साथ नहीं रखा गया था। यह निर्गमन 35:1 और उसके बाद 35:9 तक नहीं है, जहां वास्तव में तम्बू का निर्माण किया गया है। गोल्डन काफ़ घटना के समय कोई तम्बू नहीं था। जब आप तम्बू को नामित करने के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा को देखते हैं, तो आपको विभिन्न प्रकार के शब्द मिलते हैं। तम्बू के लिए एक मात्र हिब्रू शब्द है - *ओहेल*। सबसे आम *मिशकान* है। यह मूल शब्द *शकन*, "निवास करना" से आया है। *मिशकान* मौखिक रूप *शकन* से एक संज्ञा है। यह इस विचार को दर्शाता है कि ईश्वर अपने लोगों, इज़राइल के बीच रहना चाहता है; निवास करने के लिए, तम्बू में।

एक अन्य पदनाम वह है जो निर्गमन 33:7 में है, *जैसा कि कहा गया है* - "बैठक का तम्बू।" यह दिलचस्प है कि किंग जेम्स संस्करण में, "बैठक का तम्बू" का *अनुवाद* "मण्डली का तम्बू" किया गया था। दूसरे शब्दों में, *मोएड का* अनुवाद "मण्डली" है। *मोएड* शब्द का सीधा सा अर्थ है "बैठक।" यह परमेश्वर और मूसा के बीच मिलन का तम्बू है। यह एक कॉर्पोरेट निकाय के रूप में लोगों के एक साथ मिलने का तंबू नहीं है। दूसरे शब्दों में, "मण्डली का तम्बू" यह लेबल जो वर्णन कर रहा है उस पर एक गलत विचार देता है। दूसरा लेबल जो कभी-कभी उपयोग किया जाता है वह है *मिशकान हेडुत* - गवाही का तम्बू।

हालाँकि, इस श्लोक 7 पर वापस जाने के लिए, जहाँ आपके पास वह तीसरा लेबल है, वह स्लाइड 30 पर है, *ओहेल मोएड*; वह वर्णन तम्बू के संबंध में होता है। यदि आप निर्गमन 27:21 पर वापस जाते हैं, जहां तम्बू के निर्माण के लिए निर्देश दिए गए हैं, तो आप पढ़ते हैं, "मिलापवाले तम्बू में, परदे के बाहर," अर्थात्, गवाही के सामने, "हारून और उसके पुत्र मैं यहोवा के साम्हने दीपक जलाता रहूंगा।" बैठक का तम्बू वहाँ *ओहेल मोएड* है, जैसा कि 33:7 में है। तो ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा ने तम्बू का नाम लिया, *उसने कहा* और इसे एक तम्बू में लगाया जिसे उसने शिविर के बाहर स्थापित किया, जहां वह भगवान से मुलाकात करेगा। मुझे लगता है कि इसने कुछ लोगों को सोचने के लिए प्रेरित किया है, आपको यह भ्रम है, आपके पास यह यहाँ तम्बू के संदर्भ में है। यह "मंदिर" के प्रति श्रद्धा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग कह सकते हैं, यह केवल उस तम्बू का संदर्भ है जिसे मूसा ने शिविर के बाहर खड़ा किया था, जहां वह लोगों के लिए प्रार्थना करने और उनके लिए

प्रभु का वचन प्राप्त करने के लिए गया था। तो आपने निर्गमन 33:7 और इसके बाद पढ़ा, "मूसा एक तम्बू लेता था और उसे छावनी के बाहर कुछ दूरी पर खड़ा करता था, और उसे 'मिलापवाला तम्बू' कहता था।" जो कोई यहोवा से प्रश्न करता वह छावनी के बाहर मिलापवाले तम्बू के पास जाता। और जब कभी मूसा तम्बू के पास जाता था, तब तब सब लोग उठकर अपने अपने तम्बू के द्वार पर खड़े हो जाते थे, और जब तक मूसा तम्बू में प्रवेश न करता तब तक उसकी ओर देखते रहते थे। जब मूसा तम्बू में जाता, तब बादल का खम्भा नीचे आकर द्वार पर ठहर जाता, और यहोवा मूसा से बातें करता रहता। जब जब लोगों ने देखा कि बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर खड़ा है, तब तब वे सब अपने अपने तम्बू के द्वार पर खड़े होकर दण्डवत् करते थे। यहोवा मूसा से आमने-सामने बात करेगा, जैसे कोई व्यक्ति अपने मित्र से बात करता है। तब मूसा तो छावनी में लौट आया, परन्तु उसका जवान सहायक नून का पुत्र यहोशू तम्बू से न निकला।

5. ईश्वर की उपस्थिति तो यह संदर्भ इस तम्बू का है जहां मूसा ने शिविर के बाहर ईश्वर से बात की थी। यह तम्बू नहीं है, स्रोत आलोचना के ये सभी विस्तृत सिद्धांत यहां जो कुछ भी चल रहा है उसमें से अधिकांश के बिंदु को भूल जाते हैं। तो मूसा उस तंबू में क्या कर रहा है? निर्गमन 33:12, मूसा ने कहा, "तू [प्रभु] मुझ से कहता आया है, 'इन लोगों का नेतृत्व कर,' परन्तु तू ने मुझे नहीं बताया कि तू मेरे साथ किसे भेजेगा। तुमने कहा है, 'मैं तुम्हें नाम से जानता हूं कि तुमने मुझ पर कृपा की है।' यदि तू मुझ पर प्रसन्न है, तो मुझे अपना मार्ग सिखा, जिससे मैं तुझे जान सकूं और तेरी कृपा मुझ पर बनी रहे। याद रखें कि यह देश आपके लोग हैं।' प्रभु ने उत्तर दिया, "और मुझे लगता है कि यहां अनुवाद का प्रश्न है; मुझे लगता है कि यह एक पूछताछ है. एनआईवी का कहना है, "मेरी उपस्थिति आपके साथ रहेगी और मैं आपको आराम दूंगा।" मुझे लगता है कि यह एक प्रश्नवाचक प्रश्न है: "क्या मेरी उपस्थिति आपके साथ रहेगी? और क्या मैं तुम्हें आराम दूँ?" अध्याय 33 आयत 15 में मूसा ने उसे उत्तर दिया, "यदि तू हमारे संग न चले, तो हमें अपने पास से न भेज।" देखिए, यही वह मुद्दा है। क्या प्रभु अपने लोगों के साथ इस बिंदु से आगे उनकी यात्रा पर जाने वाले हैं, या क्या यह एक देवदूत है जो उनके साथ निर्गमन 32:34 और 33:2 पर वापस जाकर उनका अनुसरण करेगा? इसलिए अध्याय 33 श्लोक 17 में, प्रभु फिर से नरम हो गए, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'तुमने जो कहा है वही

मैं करूंगा, क्योंकि मैं तुमसे प्रसन्न हूँ और मैं तुम्हें नाम से जानता हूँ।" इसलिए प्रभु फिर से नरम हो गए। , और जब वे अपनी यात्रा जारी रखेंगे तो उनकी उपस्थिति उनके साथ रहेगी।

एफ। वाचा का नवीनीकरण - निर्गमन 34 - सांस्कृतिक डिकालॉग (?) आइए एफ पर चलते हैं, "वाचा का नवीनीकरण - निर्गमन 34।" आप अध्याय 34 के साथ फिर से आलोचनात्मक सिद्धांतों के प्रश्न पर आते हैं। अध्याय 34 कभी-कभी, जिसे वे "सांस्कृतिक डिकालॉग" कहते हैं। सिद्धांत यह है कि निर्गमन 20 में, जहां आपके पास दस आज़ाएं हैं, वह ई स्रोत है। एक्सोडस 34, जहां आपके पास यह "कल्तिक डिकालॉग" है, वह स्रोत आलोचकों के अनुसार जे स्रोत है। तो फिर आपके पास दो डिकालॉग हैं; आपके पास निर्गमन 20 डिकालॉग है और आपके पास निर्गमन 34 डिकालॉग है। एक्सोडस 34 डिकालॉग को जे स्रोत कहा जाता है, और एक्सोडस 20 डिकालॉग को ई स्रोत कहा जाता है।

यदि आप निर्गमन 34 पर नज़र डालें, तो आप कुछ आज़ाएँ चुन सकते हैं जो निर्गमन 20 की दस आज़ाओं के रूप में हैं। उदाहरण के लिए, श्लोक 14 को देखें, "किसी अन्य देवता की पूजा न करें। क्योंकि प्रभु, जिसका नाम ईर्ष्यालु है, ईर्ष्यालु ईश्वर है।" श्लोक 17, "ढली हुई मूर्तियाँ न बनाना।" पद 18, "अखमीरी रोटी का पर्व मनाओ।" श्लोक 21, "छः दिन तक परिश्रम करना, सातवें दिन विश्राम करना।" श्लोक 22, "सप्ताहों का पर्व मनाओ।" श्लोक 25, "बलि का खून मत चढ़ाओ।" पद 26, "पहले फल का सर्वोत्तम फल लाओ।" पद 26बी, "बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना।"

तो आप नीचे जाते हैं, और आपको "यह करो, वह मत करो" के आदेश दिखाई देते हैं। डिकालॉग प्राप्त करने के लिए आप उनमें से दस को चुनने का प्रयास करते हैं और यह थोड़ा अधिक जटिल हो जाता है। तो आप देख रहे हैं कि इस अध्याय का जोर औपचारिक पूजा पर है। ये वे आदेश हैं जिनका संबंध इस्राएल को यहोवा की आराधना करने के तरीके से है। यहां आपके इस तरह के जोर देने का कारण यह है कि इज़राइल ने अपने धार्मिक पालन के उस विशेष क्षेत्र में पाप के साथ अनुबंध को तोड़ दिया है। उन्होंने ही ये मूर्ति बनाई है। इसलिए गोल्डन काफ़ घटना के बाद भगवान ने उन्हें पूजा के बारे में ये अतिरिक्त नियम दिए। यह एक तरह से उस तथ्य को बदल देता

है। यह दस आज्ञाओं का नया संस्करण नहीं है। यह इस तथ्य को नहीं बदलता है कि जब नई पट्टिकाएँ परमेश्वर की उंगली से फिर से लिखी जाती हैं तो यह वही चीज़ होती है जो पहली पर थी - निर्गमन 20 की दस आज्ञाएँ। वास्तव में, आप अध्याय 34 के पहले श्लोक में देखते हैं, प्रभु कहते हैं, “पहले की तरह पत्थर की पट्टियों से छेनी निकालो। मैं उन पर वे शब्द लिखूंगा जो पहली पट्टिका पर थे।” अतः मूसा ने वैसा ही किया। इस पेरिकोप के अंत में, आप श्लोक 28 में पढ़ते हैं, “उसने,” अर्थात्, ईश्वर ने, “नियमों की पट्टियों पर वाचा के शब्द - दस आज्ञाएँ लिखीं।”

1. मूसा का चेहरा और सींग - व्लोट इसलिए निर्गमन 34 में आपके पास इज़राइल को दी गई इस अतिरिक्त सामग्री के साथ नवीनीकृत वाचा है। यह उस तरीके पर केंद्रित है जिसमें भगवान चाहते हैं कि वे स्वयं की पूजा करें। आपने अध्याय के अंत में पढ़ा, “जब मूसा अपने हाथों में गवाही की दो तख्तियाँ लेकर सिनाई पर्वत से नीचे आए,” यह अध्याय 34 श्लोक 29 है, एनआईवी कहता है, “उन्हें पता नहीं था कि उनका चेहरा उज्वल था क्योंकि उस ने यहोवा से बातें की थीं। जब हारून और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा, तब उसका मुख उज्वल हो गया, और वे उसके निकट आने से डर गए। और आप आयत 33 में पढ़ते हैं, उसने अपने चेहरे पर परदा डाल लिया। लैटिन व्लोट निर्गमन 33:29बी का अनुवाद करता है, “उसे पता नहीं था कि उसका चेहरा उज्वल था” जैसे “वह नहीं जानता था कि उसका चेहरा सींग वाला था।” इसका कारण यह है कि क्रिया “*करान*” है, जिसका अर्थ है “किरणें भेजना।” उसी मूल से बना एक संज्ञा रूप *क्यूरेन* है जिसका अर्थ है “सींग।” मूल पाठ में स्वर नहीं थे। जब जेरोम हिब्रू का लैटिन में अनुवाद कर रहा था, तो उसने यह *क्रेरेन* मूल लिया, जिसका अर्थ है “सींग” इसका अनुवाद “मूसा को नहीं पता था कि उसका चेहरा सींग वाला था।”

यहां एक दिलचस्प तथ्य है लेकिन महत्वपूर्ण नहीं; 1960 के दशक तक मुझे इसके बारे में कभी पता नहीं था, मैं रोम में था और कैथेड्रल में गया जिसे “सेंट” कहा जाता है। पीटर की जंजीरें।” गिरजाघर में वेदी में यह पुराना बक्सा है जिसमें कुछ जंजीरें हैं जिनके बारे में माना जाता है कि जब पीटर जेल में था तो उसे जंजीरों से बांध दिया गया था। यदि आप खड़े होकर दाहिनी ओर, चर्च के सामने की ओर उस वेदी को देख रहे हैं, तो वहां पत्थर की पट्टियों के साथ माइकलएंजेलो: मूसा



द्वारा बनाई गई एक विशाल मूर्ति है। यह मूर्तिकला का एक जबरदस्त नमूना है। यह अत्यधिक प्रभावशाली है; पीटर की जंजीरों से कहीं अधिक प्रभावशाली। लेकिन इसके बारे में मजेदार बात यह है कि ये सींग मूसा के माथे से निकले हुए हैं। मुझे याद है कि मैं उसे देख रहा था और मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था कि माइकल एंजेलो ने मूसा की मूर्ति क्यों बनाई होगी और उस पर सींग क्यों लगाए होंगे। मेरा मतलब है, आमतौर पर आप शैतान के सींगों के बारे में सोचेंगे। बाद में मैंने उस पर गौर किया और पाया कि यह इस पाठ से आया है। माइकल एंजेलो लैटिन वुल्फोट पढ़ रहा था, और पाठ कर रहा था, "वह पहाड़ से नीचे आया, और उसे नहीं पता था कि उसका चेहरा सींगदार था!" इसलिये उस ने मूसा की सींगोंवाली मूरत बनवाई। यदि आपको कभी रोम की यात्रा करने का मौका मिले - यह मूर्तिकला का एक उल्लेखनीय नमूना है - तो आपको पता चल जाएगा कि मूसा के पास सींग क्यों थे। आप इसे कुछ पेंटिंग्स में भी देख सकते हैं; कुछ पुरानी पेंटिंग्स में मूसा को सींगों के साथ चित्रित किया गया है।

#### 5. तम्बू का निर्माण किया गया है - निर्गमन 35-39

आइए 5 पर चलते हैं, "तम्बू का निर्माण हो गया है।" अब जब वाचा पुनः स्थापित हो गई है तो मूसा ने निर्गमन 25 से 31 में उसे दिए गए निर्देशों को पूरा करने का निश्चय किया है। जब आप पुस्तक की संरचना देखते हैं तो यह दिलचस्प होता है। अध्याय 25 से 31 में, मूसा को तम्बू के निर्माण के बारे में निर्देश दिए गए थे। अध्याय 35 से 39 में, वह वास्तव में तम्बू के निर्माण के बारे में बताता है। तो आपके पास निर्माण के निर्देश हैं, और आपके पास वास्तविक भवन का लेखा-जोखा है। बीच में, उस क्रम के रुकावट के रूप में, आपके पास अध्याय 32 से 34 हैं, जो गोल्डन काफ़ घटना है। गोल्डन काफ़ की घटना प्रभु की उपस्थिति को सुरक्षित करने के लिए इज़राइल के प्रतीत होने वाले मानवीय तरीके की तरह थी, और यह उस दैवीय इच्छित तरीके के विपरीत है जिसमें ईश्वर चाहता था कि उसके लोग उसकी उपस्थिति प्रदान करें।

आपको तम्बू के निर्माण के बारे में वे निर्देश याद हैं, वे निर्देश समाप्त हो गए, यदि आप सब्त के बारे में आदेश के साथ अध्याय 31 के अंत में वापस जाते हैं। 31:12 में, मैंने उस पर कुछ

टिप्पणियाँ कीं। "छह दिन काम करो, सातवां दिन भगवान के लिए है, कोई काम नहीं करना है।" फिर आपको अध्याय 32 से 34 का अंतराल मिलता है। जब आप अध्याय 35 शुरू करते हैं, तो इसकी शुरुआत किससे होती है? सप्ताह की मान्यता, वह वापस जाता है और सप्ताह पर फिर से जोर देता है। "मूसा ने पूरे इस्राएली समुदाय को इकट्ठा किया। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें करने की आज्ञा प्रभु तुम्हें दे रहा है। छः दिन तक काम करना, और सातवां दिन पवित्र ठहरना। इसलिए उन्होंने इस बात पर फिर से जोर दिया है। हम तम्बू के निर्माण को अपने लोगों के बीच प्रभु की निरंतर उपस्थिति के प्रावधान के रूप में देख सकते हैं, जैसे वह सिनाई में थे। सिनाई में, वह पहाड़ से नीचे आता है, वह अपना वचन देता है, मूसा लोगों को परमेश्वर का वचन देता है। तम्बू वास्तव में एक प्रकार का चल सिनाई है, क्योंकि तम्बू के निर्माण के बाद जैसे ही इस्राएली यात्रा पर निकलते हैं, प्रभु उनके साथ चलने वाले होते हैं। लेकिन उनकी मौजूदगी लगातार उनके बीच रहेगी। इसलिए तम्बू के निर्माण का कार्य अब शुरू होने वाला है।

एक। तम्बू की व्याख्या का इतिहास आगे बढ़ने से पहले, मैं इन अध्यायों का अध्ययन नहीं करूँगा और उन पर टिप्पणी नहीं करूँगा, लेकिन मैं तम्बू की व्याख्या के इतिहास पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। तम्बू बहुत अधिक अटकलबाजी और, शायद, गैर-जिम्मेदाराना प्रकार की व्याख्या का विषय रहा है। इसकी व्याख्या के इतिहास में, तम्बू के लिए बहुत व्यापक प्रकार के प्रतीकात्मक अर्थ सुझाए गए हैं। कुछ यहूदी व्याख्याओं पर भी वापस जाएँ, अलेक्जेंड्रिया के फिलो, जो एक यहूदी व्याख्याता थे। वह व्याख्या की अपनी पद्धति में बहुत प्रतीकात्मक थे और उन्होंने कहा कि तम्बू ब्रह्मांड के एक पैटर्न का प्रतिनिधित्व करता है। बाहरी प्रांगण पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है, पवित्र स्थान - स्वर्ग का, बारह रोटियों वाली मेज 12 महीनों वाले वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है, सात शाखाओं वाली सुनहरी मोमबत्ती सात ग्रहों का प्रतिनिधित्व करती है। मुझे यकीन नहीं है कि अब हम क्या करेंगे क्योंकि हमारे पास सात से अधिक ग्रह हैं। बैंगनी, नीले और लाल रंग का लिनन तत्वों आदि का प्रतिनिधित्व करता है। तो यह एक उदाहरण है।

दूसरों ने तम्बू को भगवान की छवि में मनुष्य को चित्रित करने के रूप में देखा है। परमपवित्र स्थान मनुष्य की आत्मा है - यह केंद्र है। पवित्र स्थान आत्मा है, जहां सात रोशनी वाली

मोमबत्ती है, यानी विभिन्न प्रकार की समझ, विवेक, ज्ञान और अवधारणा। बाहरी न्यायालय एक निकाय है, जो सभी के लिए खुला है, ताकि हर कोई देख सके कि यह क्या है और यह कैसे काम करता है।

इसलिए इस प्रकार की अत्यधिक काल्पनिक व्याख्याएँ काफी आम हैं। जब आप तम्बू को समग्र रूप से देखने से परे हो जाते हैं, जो उस प्रकार की किसी चीज़ का प्रतीक है, तो ऐसे कई अन्य व्याख्याकार हैं जो सभी रंगों, सामग्रियों, धातु के प्रकारों को लेते हैं, और रंगों में महत्व पाते हैं; धातुओं में महत्व खोजें।

बी। टैबरनेकल के प्रतीकवाद की व्याख्या करने पर फैबैरन की सलाह यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 38 और 39 पर देखें, तो मुझे लगता है कि मैं इसे पढ़ने के लिए समय लूंगा, क्योंकि मुझे लगता है कि यह मुद्दे पर आता है। यह पैट्रिक फेयरबैर्न की *द टाइपोलॉजी ऑफ स्क्रिप्चर* से है, जो तम्बू और सामग्रियों को बनाने वाले विभिन्न लेखों के बारे में बात करता है। वह कहते हैं, “इस्तेमाल किए गए अन्य लेखों के संबंध में, ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि उनके चयन के लिए कोई उच्च कारण दिया जा सकता है, सिवाय इसके कि वे अपने कई प्रकारों में सबसे अच्छे और योग्य थे। उनमें सबसे कीमती धातुएँ, लिनन निर्माण में बेहतरीन सामान, कढ़ाई की गई कारीगरी, सबसे समृद्ध और सबसे भव्य रंग, और सबसे सुंदर और महंगे रत्न शामिल थे। किसी बाहरी तंत्र के माध्यम से, इसराइल के राजा के रूप में यहोवा की उत्कृष्ट महिमा और महिमा के विचार को सामने लाना और उस विलक्षण सम्मान का विचार सामने लाना नितांत आवश्यक था, जिसका आनंद उन लोगों को मिलता था, जिन्हें उसके सामने सेवा करने और सेवा करने के लिए भर्ती किया गया था। . लेकिन यह केवल तम्बू के निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की समृद्ध और महंगी प्रकृति और इसके दरबार में सेवा करने के लिए नियुक्त किए गए लोगों के आधिकारिक परिधानों के कारण ही किया जा सकता था। महायाजक के परिधानों के बारे में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उन्हें 'महिमा (या आभूषण) और सुंदरता के लिए' बनाया जाना था; किस प्रयोजन के लिए वे मिस्र के महीन सनी के कपड़े से बने होते थे, जिस पर नीले, बैंगनी और लाल रंग, सबसे चमकीले रंगों में सुई के काम से कढ़ाई की जाती थी। और यदि तम्बू में सेवा करने वालों के कपड़ों के संबंध में प्रभाव उत्पन्न करने

के लिए इस प्रकार उपाय किए गए थे, तो यह अनुमान लगाना उचित है कि तंबू के संबंध में भी ऐसा ही किया जाएगा। इसलिए हमने मंदिर के बारे में पढ़ा, जो निवास का अधिक उत्तम रूप था, कि इसे 'इतना भव्य बनाया जाना था कि यह सभी देशों में प्रसिद्धि और गौरव का हो'; और इस उद्देश्य के लिए सुलैमान द्वारा नियोजित अन्य चीजों के अलावा, 'घर को सुंदरता के लिए कीमती पत्थरों से सजाया गया था।' इसलिए, तम्बू के निर्माण में ऐसी सामग्रियों का उपयोग किया गया था, जो उस व्यक्ति की महानता और महिमा के उपयुक्त प्रभाव को व्यक्त करने के लिए सबसे उपयुक्त थीं जिनके विशिष्ट निवास के लिए इसे बनाया गया था। और चूँकि इसमें हम उनके रोजगार के लिए पर्याप्त कारण से सुसज्जित हैं, दूसरों की तलाश के लिए हम केवल अनिश्चितता और अनुमान के क्षेत्रों में भटकते हैं।

दूसरे शब्दों में, फेयरबैर्न जो सुझाव दे रहा है वह यह है कि हमें इस तथ्य के अलावा किसी अन्य अर्थ की तलाश नहीं करनी चाहिए कि इन सामग्रियों और रंगों को इस स्थान की भव्यता और महिमा पर जोर देने के लिए चुना गया था। तो अपने अगले पैराग्राफ में, वह कहते हैं, "इसलिए हम धातुओं के आंतरिक गुणों और कई कपड़ों में नियोजित विशिष्ट रंगों से बह, साथ ही बड़े धर्मशास्त्रियों द्वारा निकाले गए अर्थों को त्याग देते हैं। वे यहां जगह से बाहर हैं। प्रश्न यह नहीं है कि क्या ऐसी चीजों का उपयोग नैतिक और धार्मिक प्रकृति के कुछ विचारों को व्यक्त करने के लिए नहीं किया गया होगा, बल्कि यह है कि क्या वे वास्तव में यहाँ इस प्रकार नियोजित थीं; और हमारी राय में, न तो उनके रोजगार का अवसर, न ही जिस तरीके से यह किया गया था, वह अनुमान के लिए कम से कम वारंट देता है।

जहां तक धातुओं का सवाल है, हम पवित्र शास्त्र में उनके साथ किसी प्रतीकात्मक अर्थ के जुड़े होने का कोई आधार नहीं देखते हैं, जो उनकी महँगाई और सामान्य उपयोग से सुझाए गए अर्थ से अलग है। पीतल को बाहरी आंगन की फिटिंग और फर्नीचर में प्रचलित धातु होना चाहिए था, जहां बड़े पैमाने पर लोग अपने प्रसाद के साथ आ सकते थे, और पवित्रस्थान में चांदी और सोना निस्संदेह उस प्रगति का प्रतीक माना जा सकता है जो इसमें किया गया है। दिव्य उत्कृष्टता और महिमा की खोज, उतना ही अधिक व्यक्ति उसकी उपस्थिति के रहस्य में प्रवेश करता है और

उसकी सुंदरता को देखने के लिए तैयार होता है।

कुछ रंगों का प्रतीकात्मक उपयोग हम निस्संदेह पाते हैं, जैसे कि सफेद रंग, पवित्रता के विचार को व्यक्त करने में, या लाल रंग का, अपराधबोध को व्यक्त करने में; लेकिन जब ऐसा उपयोग किया जाता है, तो विशेष रंग को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, और स्पष्ट रूप से ऐसे प्रतीक की मांग करने वाले अवसर से भी जुड़ा होना चाहिए। तम्बू में रंगों के संबंध में यह मामला नहीं था। वहाँ के रंग, अधिकांश भाग में, संयुक्त रूप में दिखाई देते थे; और यदि उन्हें अलग करना और प्रत्येक को एक विशिष्ट मूल्य देना संभव होता, तो यह इंगित करने के लिए कुछ भी नहीं था कि प्रतीकित विचारों को कैसे देखा जाना चाहिए, चाहे वह भगवान के संदर्भ में हो या उसके उपासकों के संदर्भ में। वास्तव में यह खोज ही आवश्यक रूप से अनंत सूक्ष्मताओं को जन्म देगी, और मस्तिष्क को एक प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रभाव प्राप्त करने से रोकेगी जिसे हमने देखा है जिसे संप्रेषित करने का इरादा था।

“इस तरह के अर्थों के साथ आवश्यक रूप से जुड़ी मनमानी के उदाहरण के रूप में, बहू लाल रंग को, उसकी बैंगनी छाया में, महिमा के, उसके लाल रंग में, भगवान की जीवन देने वाली संपत्ति के रूप में महत्वपूर्ण बनाता है; जबकि न्यूमैन, प्रकाश और रंग के गुणों की ताजा जांच के बाद, लाल रंग में ईश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति को देखता है, बैंगनी रंग को अनुग्रह की दया की ओर, लाल रंग को न्याय की ईर्ष्या की ओर झुकाते हुए देखता है। बहू के साथ, नीला आकाश की महिमा का प्रतीक है जहां से भगवान अपनी महिमा प्रकट करते हैं; न्यूमैन के साथ, यह समुद्र की गहराई की ओर इशारा करता है, और भगवान के सार का प्रतीक है, जो दुर्गम प्रकाश में रहता है, और निर्माता की स्थिरता में वाचा की नींव रखता है। इस तरह के विविध और मनमाने अर्थ, बड़े टाइपोलॉजिस्टों की मनमर्जी को टक्कर देते हुए, उस जमीन की कल्पनाशीलता को दर्शाते हैं जिस पर वे पले-बढ़े हैं। और चूंकि रंग कढ़ाई के कार्यों में एक दूसरे से जुड़े हुए थे, प्रत्येक अपने स्वयं के किसी स्थान पर अलग-अलग खड़े नहीं थे, हमारे पास यह कल्पना करने का कोई कारण नहीं है कि महायाजक की पोशाक में कला के समान कार्यों के अलावा उनका कोई अन्य उद्देश्य था, अर्थात् आभूषण के लिए। और सौंदर्य," और इसे वहीं छोड़ दें। दूसरे शब्दों में, तम्बू के रंगों और सामग्रियों के लिए गहरे

आध्यात्मिक महत्व की तलाश न करें।

मुझे लगता है कि यह शायद अच्छी सलाह है। तम्बू के संबंध में इन चीज़ों की व्याख्या के क्षेत्र में भारी मात्रा में दुरुपयोग हुआ है। हालाँकि, ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं, और जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक यह सुझाव देती प्रतीत होती है, कि एक वैध अर्थ है जिसमें तम्बू को एक प्रतीकात्मक महत्व दिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, यह आने वाली किसी बड़ी घटना की ओर इशारा कर रहा है।

सी। तम्बू के विशिष्ट महत्व पर वेन्नॉय और वोस: प्रतीक और प्रकार

मुझे थोड़ा और आगे जाने दो। मुझे लगता है कि एक बार जब आप कहते हैं कि तम्बू से जुड़ा हुआ वैध टाइपोलॉजिकल महत्व हो सकता है, तो सवाल तुरंत बन जाता है, "आप वैध से अवैध को कैसे अलग करते हैं?" मुझे लगता है कि गेरहार्डस वोस ने इन अंशों के साथ कुछ अच्छी दिशा दी है, न कि केवल एक कलाकार द्वारा टेबरनेकल की पुस्तक का प्रतिपादन कैसा दिखेगा। यह स्लाइड 31 पर दिया गया चित्र है।

आइए, जहां तक टाइपोलॉजिकल महत्व का सवाल है, अर्थ और महत्व के इस प्रश्न पर वापस आते हैं। अपने उद्धरण पृष्ठ 40 को देखें। अपने *बाइबिल धर्मशास्त्र* में, वोस टाइपोलॉजी पर चर्चा करता है, और वह भगवान के तम्बू के संबंध में इसकी चर्चा करता है और कहता है कि यदि आप तम्बू या पुराने में किसी अन्य चीज़ के संदर्भ में, टाइपोलॉजिकल महत्व के बारे में बात करने जा रहे हैं वसीयतनामा, आपको किसी चीज़ के प्रतीकवाद और उसके प्रतीकात्मक महत्व के बीच संबंध स्थापित करना होगा।

यदि आप पृष्ठ 40 को देखें, तो परिभाषा में, प्रतीक क्या है? आपके उद्धरण में पृष्ठ 40 के शीर्ष पर, वोस के अनुसार, "एक प्रतीक अपने धार्मिक महत्व में कुछ ऐसा है जो किसी निश्चित तथ्य या सिद्धांत या आध्यात्मिक प्रकृति के संबंध को दृश्य रूप में गहराई से चित्रित करता है। इसमें जिन चीज़ों को चित्रित किया गया है वे वर्तमान अस्तित्व और वर्तमान अनुप्रयोग की हैं। वे उस समय लागू होते हैं जब प्रतीक लागू होता है। तो प्रतीक यही है। यह किसी आध्यात्मिक प्रकृति का चित्रण कर रहा है; भौतिक रूप में आध्यात्मिक प्रकृति का कोई तथ्य या सत्य। इसमें जिन चीज़ों का चित्रण

किया गया है वे वर्तमान अस्तित्व और वर्तमान अनुप्रयोग की होनी चाहिए। एक प्रकार के साथ, वह अगली उद्धृत पंक्ति में कहते हैं, "एक ही चीज़ के साथ, एक प्रकार के रूप में माना जाता है, यह अलग है। एक विशिष्ट चीज़ संभावित होती है; इसका संबंध इस बात से है कि भविष्य में क्या वास्तविक या लागू होगा। "तो एक प्रकार संभावित है; एक प्रतीक वर्तमान अस्तित्व का है। फिर यहाँ वह एक संबंध प्रस्तुत करता है, जैसा कि स्लाइड 32 पर देखा गया है; वह कहते हैं, "एक प्रकार कभी भी स्वतंत्र रूप से एक प्रकार नहीं हो सकता है, चाहे उसका पहला प्रतीक ही क्यों न हो। और केवल यह पता लगाने के बाद कि कोई चीज़ किस चीज़ का प्रतीक है, हम वैध रूप से यह सवाल उठाने के लिए आगे बढ़ सकते हैं कि यह बाद के लिए क्या दर्शाता है, इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकता है जो यह एक उच्च स्तर पर उठाए जाने का प्रतीक है।

पृष्ठ 40, तीसरे पैराग्राफ पर वापस जाएँ। वोस कहते हैं, "समझने की मुख्य समस्या यह है कि चित्रण की एक ही प्रणाली एक ही समय में प्रतीकात्मक और विशिष्ट क्षमता में कैसे काम कर सकती है। जाहिर तौर पर यह असंभव होता यदि चित्रित चीज़ें प्रत्येक मामले में भिन्न या विविध होती, एक-दूसरे से असंबंधित होतीं। यदि कोई चीज़ किसी निश्चित वास्तविकता की सटीक तस्वीर है, तो यह इस तथ्य से बिल्कुल अलग प्रकृति की किसी अन्य भविष्य की वास्तविकता की ओर इशारा करने के लिए अयोग्य प्रतीत होगी। समस्या का समाधान इसमें निहित है, कि जिन चीज़ों का प्रतीक किया गया है और जो चीज़ें टाइप की गयी हैं, वे अलग-अलग चीज़ों का समूह नहीं हैं। वे वास्तव में एक ही चीज़ें हैं, केवल इस संबंध में भिन्न हैं कि वे मुक्ति में विकास के पहले निचले चरण पर आते हैं, और फिर बाद की अवधि में, उच्च चरण पर आते हैं। इस प्रकार तथ्य या सत्य के पहले से मौजूद संस्करण के संबंध में जो प्रतीकात्मक है, वह उसी तथ्य या सत्य के बाद के, अंतिम संस्करण का विशिष्ट, भविष्यसूचक बन जाता है। इससे यह ज्ञात होगा कि एक प्रकार पहले प्रतीक होने से स्वतंत्र होकर कभी भी एक प्रकार नहीं हो सकता। टाइपोलॉजी के घर का प्रवेश द्वार प्रतीकवाद के घर के अंतिम छोर पर है।

तो, आपके पास एक प्रतीक है जो कुछ आध्यात्मिक सत्य को चित्रित करता है जो वर्तमान वास्तविकता है। यह मुक्तिबोध इतिहास की लंबी शृंखला में बाद के संस्करण के लिए विशिष्ट बन जाता है; यह उसी सत्य का बाद का संस्करण है। कोई अलग सत्य नहीं, बल्कि वही सत्य मुक्तिबोध

के इतिहास के बाद के उच्चतर चरण में पुनः प्रकट होता है। “तो केवल यह पता चलने के बाद कि कोई चीज़ किसका प्रतीक है, हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि वह क्या दर्शाती है। उत्तरार्द्ध कभी भी पूर्व के अलावा कुछ और नहीं हो सकता। अब इसे एक कदम और आगे बढ़ाएं। वह बंधन जो प्रकार को विरोधी प्रकार से जोड़ता है, मुक्ति की प्रगति में महत्वपूर्ण निरंतरता का बंधन होना चाहिए।

पृष्ठ 40 पर अगले अनुच्छेद पर ध्यान दें, “यह है मौलिक नियम को होना देखा में पता लगाने क्या तत्वों में पुराना नियम हैं ठेठ, और जिसमें चीज़ें तदनुसार को उन्हें जैसा प्रतिप्रकार निहित होना। केवल बाद रखना की खोज की क्या ए चीज़ प्रतीक है, कर सकना हम वैध तरीके से आगे बढ़ना को रखना सवाल क्या यह टाइप करता है, के लिए बाद वाला कर सकना कभी नहीं होना किसी प्रकार से अन्य बजाय पूर्व उठा लिया को ए उच्च विमान। गहरा संबंध वह रखती है प्रकार और प्रतिरूप साथ में अवश्य होना ए गहरा संबंध का अत्यावश्यक निरंतरता में प्रगति का पाप मुक्ति। कहाँ यह है अवहेलना करना, और में जगह का यह गहरा संबंध हैं रखना आकस्मिक समानताएं, खालीपन का अंतर्निहित आध्यात्मिक महत्व, सभी प्रकार का विसंगतियां इच्छा परिणाम, ऐसा जैसा अवश्य लाना पूरा विषय का टाइपोलॉजी में बदनामी उदाहरण का यह हैं: लाल रस्सी का राहाब prefigures खून का मसीह; चार कुष्ठ रोगियों पर सामरिया, चार प्रचारक। “द तंबू मिलता ए साफ़ उदाहरण का साथ साथ मौजूदगी का प्रतीकात्मक और ठेठ में एक का सिद्धांत संस्थान का पुराना नियम धर्म। यह प्रतीक अत्यंत धार्मिक विचार का आवास का ईश्वर साथ उसका लोग।”

दूसरे शब्दों में, यहाँ तम्बू का प्रतीक सत्य ईश्वर अपने लोगों के बीच में निवास कर रहा है। मुक्ति की प्रगति में वह सत्य पुनः कहाँ प्रकट होता है? यहीं पर वह इसे विकसित करता है। तम्बू के विशिष्ट महत्व को प्रतीकात्मक महत्व पर निकट निर्भरता में खोजा जाना चाहिए।

डी। टैबरनेकल और क्राइस्ट, चर्च, व्यक्तिगत ईसाई और न्यू जेरूसलम हमें पूछना चाहिए कि ये धार्मिक सिद्धांत और वास्तविकताएं, जो टैबरनेकल ने समुदाय को सिखाने के लिए काम कीं, मुक्ति के बाद के इतिहास में फिर से प्रकट हुईं, अपने चरम चरण तक पहुंच गईं? सबसे पहले, हम



उन्हें महिमामंडित मसीह में खोजते हैं, इंजीलवादी जॉन 1:14 में इसके बारे में बात करते हैं, यह वही है जिसमें भगवान मनुष्यों के बीच अपनी कृपा और महिमा प्रकट करने के लिए उनके बीच आए थे। यूहन्ना 2:19-22 में, यीशु स्वयं पुराने नियम के मंदिर की भविष्यवाणी करते हैं जिसे उनके शत्रु उनके प्रति अपने रवैये के कारण नष्ट करने पर तुले हुए थे। वह अपने पुनरुत्थान के द्वारा तीन दिन में फिर से खड़ा हो जाएगा। यह व्यक्ति द्वारा बहाल पुराने नियम के अभयारण्य के बीच निरंतरता की पुष्टि करता है। इस प्रकार परमेश्वर का अपने लोगों के बीच में रहने का यह सत्य मसीह के साथ पुनः प्रकट होता है। यह वही सत्य है। मसीह मनुष्यों के बीच निवास करने के लिए आये।

लेकिन यह केवल यहीं नहीं है; अगले पैराग्राफ में देखें, “लेकिन जो ईसा मसीह के बारे में सच है, वही चर्च के बारे में भी सच है। उसमें से तम्बू भी एक प्रकार है। यह अन्यथा नहीं हो सकता, क्योंकि चर्च पुनर्जीवित मसीह का शरीर है। इसी कारण से चर्च को 'भगवान का घर' कहा जाता है।" तो यह मसीह में और चर्च में है। इसके बाद वह इसे व्यक्तिगत ईसाई में देखता है, और फिर अंततः नए यरूशलेम में देखता है। तो आप अपने लोगों के बीच में भगवान के निवास की सच्चाई को देखते हैं, यह प्रतीक है कि तम्बू आगे की ओर इशारा कर रहा है। इसलिए प्रतीकात्मक महत्व जहां आप ईश्वर के उसी सत्य को अपने लोगों के बीच में वास करते हुए देखते हैं, मुक्तिदायक इतिहास की प्रगति में फिर से प्रकट होता है, जो कि वह रेखा, बंधन है, जो इन चीजों को एक साथ रखता है। लेकिन यह वही सत्य होना चाहिए। जो प्रतीक किया गया है वह वही सत्य होना चाहिए जो दर्शाया गया है। तो आपके पास ईसा मसीह, चर्च, व्यक्तिगत ईसाई और फिर नया यरूशलेम है। मुझे लगता है कि प्रतीक में जो कुछ है, उसी सत्य की तलाश करने का वीस का संबंध आपको गैर-जिम्मेदार प्रकार की टाइपोलॉजिकल व्याख्याओं में पड़ने से बचाता है। यदि आप उसी सत्य को खो देते हैं, ऐसा मुझे लगता है, तो आप पाठ में अर्थ ला रहे हैं। आप वास्तव में व्याख्या की वैध पद्धति का पालन नहीं कर रहे हैं। टाइपोलॉजिकल व्याख्याओं के साथ व्याख्या का बहुत दुरुपयोग हुआ है।

तम्बू आगे की ओर मन्दिर की ओर संकेत कर रहा है। मंदिर केवल अधिक स्थायी और बड़े पैमाने पर तम्बू की तरह है। यद्यपि तम्बू और मंदिर दोनों एक ही सत्य हैं, जिसका प्रतीक तम्बू और मंदिर दोनों हैं। तो एक अर्थ में मंदिर और तम्बू दोनों एक ही सत्य की विभिन्न अभिव्यक्तियों की ओर इशारा कर रहे हैं, इम्मानुएल - भगवान हमारे साथ हैं।

हयेयोन लिम द्वारा प्रतिलेखित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया